Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 06, (नवंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 33–34

पशुओं में टीकाकरण का महत्व

डॉ0 अवधेश कुमार यादव[1], डॉ0 संजीव राव[2], एवं डॉ0 अविनाश कुमार राय[3]

[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु चिकित्सा),
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान),
[3]विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान),
कृषि विज्ञान केन्द्र, सोनभद्र, भारत।

Email Id: – sanjhort1317@gmail.com

लाखों किसान भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो अपने जीविकोपार्जन के लिए गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सूअर, मुर्गी और अन्य पशुओं पर निर्भर हैं। पशु न केवल दूध, मांस, अंडे और ऊन प्रदान करते हैं, बल्कि परिवहन, कृषि कार्य और जैविक खाद की आपूर्ति में भी महत्वपूर्ण हैं। पशु जीवित हैं, इसलिए वे भी कई संक्रामक रोगों से संक्रमित हो सकते हैं। बीमारी फैलने पर पशु की उत्पादन क्षमता कम हो सकती है, साथ ही पशु की मृत्यु भी हो सकती है, जिससे किसान को बहुत पैसा नुकसान उठाना पड़ता है। इस समस्या से बचने के लिए टीकाकरण सबसे सस्ता, प्रभावी और सुरक्षित उपाय है। पशुओं को टीकाकरण करने से उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है, जो उन्हें रोगों से लड़ने में सक्षम बनाता है।

पशुओं में टीकाकरण सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संक्रामक रोगों को रोकता है। खुरपका–मुंहपका (थ्डव्), ब्रूसेलोसिस, ब्लैक क्वार्टर, भ्, रैबीज, पीपीआर, न्यूकैसल रोग आदि पशु–रोग वायरस या बैक्टीरिया से फैलते हैं, जो एक पशु से पूरे झुंड में फैल सकते हैं। टीकाकरण से रोग की गंभीरता कम हो जाती है या रोग पूरी तरह नियंत्रित हो जाता है। झुंड के 80 से 90 प्रतिशत पशुओं को टीकाकरण करने से एक प्रकार की सामूहिक प्रतिरक्षा (भ्मतक प्उउनदपजल) विकसित होती है, जो रोग फैलने से रोकती है। इससे पशु उत्पादकता स्थिर रहती है और किसान को निरंतर लाभ मिलता है।

टीकाकरण का एक और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह पशुओं की उत्पादन क्षमता को बरकरार रखता है। नियमित टीकाकरण से पशु स्वस्थ रहते हैं और अधिक दूध, मांस और अंडे देते हैं। एफएमडी से प्रभावित पशु, उदाहरण के लिए, कई सप्ताह तक दूध देना कम कर देते हैं और कभी–कभी पूरी तरह से दूध नहीं देते हैं। इसी तरह ब्रूसेलोसिस गर्भपात और बांझपन को जन्म देता है। किसान ऐसे नुकसान से बच सकता है अगर समय पर टीकाकरण करवा ले। स्वस्थ पशु अधिक पोषण अवशोषित कर सकते हैं, अधिक वृद्धि कर सकते हैं और अधिक बाजार मूल्य दिला सकते हैं। टीकाकरण पशुपालन को एक फायदेमंद व्यवसाय में बदल देता है।

टीकाकरण को पशु स्वास्थ्य संरक्षण में सबसे सस्ता और प्रभावी उपाय माना जाता है। यदि किसी पशु को गंभीर संक्रामक बीमारी हो जाती है, तो उपचार महंगा होता है और अक्सर उपचार सफल नहीं होता। दवाओं के बावजूद पशु अक्सर मर जाते हैं, जिससे नुकसान बढ़ जाता है। इसके विपरीत, एक टीके पूरे वर्ष पशु को सुरक्षित रखता है और बहुत कम खर्च करता है। उदाहरण के लिए, एचएस या ब्लैक क्वार्टर टीका बहुत सस्ता है लेकिन यह खतरनाक बीमारियों से बचाता है। इसलिए, पशुपालकों के लिए टीकाकरण "रोग से बचाव इलाज से बेहतर" है।

टीकाकरण का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि जूनोटिक रोग (पशुओं में होने वाले कई रोग) मनुष्यों में भी फैल सकते हैं। इनमें

ब्रूसेलोसिस, रैबीज, एंथ्रेक्स और साल्मोनेलोसिस शामिल हैं। यदि पशु संक्रमित हो जाएँ तो संक्रमण मनुष्यों में भी फैल सकता है और गंभीर बीमारी पैदा कर सकता है। इसलिए टीकाकरण इन जुनोटिक बीमारियों को रोक सकता है। इससे न सिर्फ पशु सुरक्षित रहते हैं, बल्कि पशुपालक परिवार और ग्रामीण समुदाय भी सुरक्षित रहते हैं। विशेष रूप से दूध देने वाले पशुओं में टीकाकरण करने से दूध की गुणवत्ता और शुद्धता बनी रहती है, जिससे उपभोक्ताओं को भी फायदा होता है।

पशु टीकाकरण भी ग्रामीण विकास और देश की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत विश्व में दूध उत्पादन में पहले स्थान पर है, लेकिन पशु स्वस्थ होने पर यह संभव है। रोग फैलने पर दुग्ध उत्पादन काफी कम हो जाता है, जिससे देश भर में आर्थिक हानि होती है। एफएमडी के कारण भारत को हर साल करोड़ों रुपये का नुकसान होता है, उदाहरण के लिए। राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (छ।क्ब्), जो सरकार द्वारा संचालित है, बड़े पैमाने पर टीकाकरण करके ऐसे नुकसान को रोकना चाहता है। पूरे देश का पशुधन मजबूत होता है और उत्पादन बढ़ता है जब सभी किसान जागरूक होते हैं और नियमित टीकाकरण करते हैं।

टीकाकरण भी पशुपालन और प्रबंधन में बहुत फायदेमंद है। नियमित टीकाकरण से पशु स्वस्थ रहते हैं और अधिक आयु तक रहते हैं। इससे किसानों को अधिक समय तक उत्पादन मिलता रहता है और उन्हें नए पशु खरीदने की जरूरत कम होती है। यदि पूरे झुंड में लगातार टीकाकरण किया जाता है, तो पशुओं पर रोगों का दबाव धीरे–धीरे कम हो जाता है और झुंड में एक स्वच्छ और संतुलित वातावरण बनाया जाता है। साथ ही, पशु टीकाकरण के बाद बीमार नहीं पड़ते, इसलिए दवा की लागत कम होती है, जिससे पशुपालन की लागत कम होती है और मुनाफा बढ़ता है।

आधुनिक पशु–स्वास्थ्य प्रबंधन तकनीकों में टीकाकरण और भी महत्वपूर्ण है। आजकल वैज्ञानिक अनुसंधान एक टीके में कई बीमारियों से बचाव कर सकते हैं। कुछ वैक्सीन लंबी अवधि तक प्रतिरक्षा देते हैं, जिससे बार–बार टीकाकरण की आवश्यकता नहीं होती। टीकाकरण के साथ–साथ कई बार पहचान चिन्ह (tagging) और रिकॉर्ड रखरखाव भी किया जाता है ताकि हर पशु की स्वास्थ्य स्थिति का पता लगाया जा सके। इससे पशुपालक अपने झुंड को बेहतर ढंग से संभाल सकते हैं और रोग के पहले लक्षणों पर तुरंत प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

पशुओं में टीकाकरण का सामाजिक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। बीमारी पूरे गाँव और आसपास के क्षेत्रों को बर्बाद कर सकती है। क्योंकि उनका जीवन पशुओं पर निर्भर है, गरीब किसान मवेशियों की मृत्यु से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। किसानों का नियमित टीकाकरण दूसरों के पशुधन की रक्षा करता है और एक सामूहिक रोग–नियंत्रण प्रणाली बनाता है। यह ग्रामीण समाजों को स्थिर और आत्मनिर्भर बनाता है। यही कारण है कि सरकार, पशुपालन विभाग और विकास संस्थाएं लगातार टीकाकरण अभियान चलाते हैं ताकि पशुपालक जागरूक हों और इस प्रक्रिया को गंभीरता से लें।

टीकाकरण बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बीमारियों को रोकने और भविष्य में पशुधन की गुणवत्ता को सुधारने में भी मदद करता है। जब स्वस्थ पशुओं का प्रजनन किया जाता है, तो उनकी संतति भी अक्सर स्वस्थ और मजबूत होती है। आगे की पीढ़ियों में बीमार होने की संभावना बहुत कम हो जाती है। देश में दुग्ध उत्पादन, मांस उत्पादन और ऊन उत्पादन में वृद्धि होगी अगर पशुओं में रोग कम होंगे। कृषि और पशु–आधारित खाद्य प्रणालियाँ मजबूत होंगी।

टीकाकरण, पशुओं में अंततः अनिवार्य है और किसी भी तरह से अनदेखा नहीं किया जा सकता। यह पशुओं को रोगों से बचाने, उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने, आर्थिक हानि को रोकने, मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा करने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थिर रखने में बहुत महत्वपूर्ण है। टीकाकरण पशुओं के जीवन और किसानों की आय को बचाता है, यह एक सरल, सुरक्षित और बहुत कारगर उपाय है। इसलिए, प्रत्येक पशुपालक का दायित्व है कि वह अपने पशुओं को निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार और वैज्ञानिक सलाह से नियमित टीकाकरण करवाए। उचित समय पर टीकाकरण कराकर किसान न केवल अपनी संपत्ति बचाता है बल्कि पूरे पशुधन को रोगमुक्त और मजबूत बनाता है।